



शृंखला: दसवीं एकताहस (समाजी कस कखा)



पाठ 3. दूर नानी देव जी और उनकी कस कखास

निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 1-15 शब्दों में दीजिए -

1. कौन सी घटना? असली सौदा क्या कहलाता है?

उत्तर: गुरु नानक देव जी के पिता चाहते थे कि वे व्यापार करें। इसलिए उन्होंने गुरु जी को एक उचित और लाभदायक सौदा करने के लिए बीस रुपये दिए। लेकिन गुरु जी ने उन रुपयों से भूखे संतों को भोजन कराया। इस घटना को उचित सौदा कहा जाता है।

2. नानी देव जी की पत्नी कहाँ से आई? उनके पुत्रों और पुत्रियों के नाम लिखिए।

उत्तर: गुरु नानक देव जी की भतीजी बीबी सुलिखानी जी बटाला (गुरदासपुर) की रहने वाली थीं। गुरु जी के दो पुत्र थे - सारी चुंडा और लखमी दास।

3. ज्ञान प्राप्ति के बाद पिता नानी देव जी ने क्या शब्द कहे और उनका अर्थ क्या था?

उत्तर: मूर्तिपूजा के बाद, गुरु नानक देव जी ने 'न हिंदू, न मुसलमान' शब्द कहे। इसका अर्थ था कि हिंदू और मुसलमान दोनों एक ही हैं।

4. सुल्तानपुर लोधी में नाना देव जी किस स्थान पर गये थे?

उत्तर: सुल्तानपुर लोधी के शासनकाल के दौरान, गुरु जी ने दौलत खान लोधी के सरकारी मोदीखाना में भूंडारी के रूप में काम किया।

5. फुर नानी देव जी द्वारा रचित चार बाणियों के नाम लिखिए।

उत्तर: कभी आसा, कभी मल्हार, कभी माझ और कभी जूजी सफाब।

6. पिता नानी देव जी किस क्षेत्र में सोचते थे?

उत्तर: कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के कारण बहुत से लोग वहाँ एकत्रित हुए थे। गुरु जी ने लोगों को सलाह दी कि उन्हें सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण के बारे में झूठी मान्यताओं और अंधविश्वासों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, बल्कि ईश्वर की आराधना और अच्छे कर्म करने चाहिए।

7. नाना देव जी ने सिद्धों और योगियों को साहस के बारे में क्या उपदेश दिया?

उत्तर: गोरखधाम में गुरु नानक देव जी ने ऋषियों और योगियों को सलाह दी कि कुएं में बालियां डालने, माथे पर राख लगाने, हाथ में छड़ी पकड़ने, सिर मुंडाकर संसार छोड़ने से मोक्ष प्राप्त नहीं होता।

8. फुर नानी देव जी के अनुसार भगवान कैसे थे?

उत्तर: गुरु जी के अनुसार, ईश्वर एक है। वह सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सर्वोच्च, निराकार और दयालु है।

9. नानी देव जी ने क्या कहा कि वे क्या देखना चाहते हैं?

उत्तर: जो सद्गुणों के धागे से बुना गया हो।

10. रियल डील से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- सिच्चा सौदे का अर्थ है- पवित्र सौदा या दूसरे शब्दों में ईमानदार व्यापार। गुरु नानक देव जी के पिता ने उन्हें व्यापार करने के लिए 20 रुपये दिए थे। इन रुपयों से गुरु जी ने भूखे साधुओं को भोजन कराया। इस घटना को 'सिच्चा सौदे' नाम दिया गया है।

(ख) निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30-50 शब्दों में दीजिए:-

1. पिता नानी देव जी के ईश्वर के विषय में विचारों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर-1. गुरुजी के अनुसार परमात्मा एक है।

2. सृष्टिकर्ता सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है, वह संसार के प्रत्येक जीव में निवास करता है।

3. ईश्वर महान एवं सर्वोच्च है, मनुष्य के लिए उसकी महानता एवं सर्वोच्चता का वर्णन करना संभव नहीं है।

4. ईश्वर का कोई रंग, रूप या आकार नहीं है; उसकी मूर्ति बनाकर पूजा नहीं की जा सकती।

5. जो कुछ भी हम प्राप्त करते हैं वह ईश्वर की ओर से एक उपहार है।

2. आपके दादा देव जी उदासी के दौरान कहां गए थे?

उत्तर: द्वितीय उदासी के दौरान, गुरु जी अदृश्य हो गए। उन्होंने गुंटूर, कांचीकुरम, पत्रचनहिल्ली, नागाटा, रामेश्वरम, पत्रवेंद्रम का भ्रमण किया और श्रीलंका पहुँचे। गुरु जी के श्रीलंका के जाफना क्षेत्र की यात्रा के अभिलेख मिलते हैं। श्रीलंका के राजा, पश्चिमनाथ या पश्चिमनाथ, गुरु जी के व्यक्तित्व से अत्यंत प्रभावित हुए और उनके शिष्य बन गए। श्रीलंका से लौटते समय, उन्होंने नीर, पद्मार, उज्जैन, अजमेर, मथुरा, परवड़ी, पहाड़सर, तखुरा (मोगा) का भ्रमण किया और कोलकाता पहुँचे। कोलकाता से निकलकर, वे सुल्तान लोधी के पास पहुँचे।

3. श्री पूर्णिमा देव जी के जन्मोत्सव का वर्णन करें।

उत्तर: जब गुरु नानक देव जी का जीवन अभी प्रारंभिक अवस्था में था, तब उनके माता-पिता प्राचीन परंपराओं के अनुसार उनका विवाह कराना चाहते थे। इस समारोह के लिए रविवार का दिन निश्चित किया गया। विवाह के प्रथम संस्कार से पहले, विद्वान हरपदयाल ने गुरु जी को अपने सामने बिठाया और उनसे विवाह करने का अनुरोध किया। कहा जाता है कि गुरु साहिब ने विवाह करने से इनकार कर दिया। उन्होंने कपास के धागों से नहीं, बल्कि सद्गुणों के धागों से बनी वरमाला माँगी।

4. श्री नानी देव जी ने अपने प्रारंभिक जीवन में कैसी जीवनशैली अपनाई थी?

उत्तर- गुरु नानक देव जी आध्यात्मिक विषयों में बहुत रुचि रखते थे। गुरु जी की रुचि में परिवर्तन लाने के लिए, उनके पिता महात्मा कालू जी ने उन्हें भैंस चराने का काम दिया। वहाँ वे स्वयं को ईश्वर भक्ति में लीन रखते और भैंसों से खेत चरतीं। महात्मा कालू जी उनके पास आते रहते। उसके बाद महात्मा कालू जी ने गुरु जी को खेती का काम दिया। उसमें भी उन्होंने विशेष रुचि दिखाई। तब महात्मा कालू जी ने गुरु जी को बीस रुपये दिए ताकि वे बाजार जाकर उचित और लाभदायक सौदा कर सकें। गुरु जी ने बीस रुपये भूखे संतों को भोजन कराने में खर्च कर दिए।

5. श्री पूर्णिमा देव जी ने अपनी पहली उदासी के दौरान किन स्थानों का दौरा किया?

पहली उदासी के दौरान, गुरु जी ने भारत के उत्तरी और पश्चिमी हिस्सों का दौरा किया। इस उदासी के दौरान भाई मर्दाना उनके साथी थे। सुल्तानूर लोधी से भागने के बाद गुरु जी सैय्यदुर के पास गये। उसके बाद उन्होंने तुलुंबा, कुरूक्षेत्र, घनित, दिल्ली, हरिद्वार, केदारनाथ, बद्रीनाथ, गोरखपुर, जोशीमठ, बनारस, गया, तिन्ना, हाजीपुर, बिहार, बंगाल, असम का दौरा किया।

धुबरी, कामरुख, गुवाहाटी, पासिलहाट, पासिलहंग, पासिलहाट, ढाका, कटक और उड़ीसा में जगन्नाथ की पूजा की जाती थी। गुरु नानक देव जी ने शरण लेने के लिए धुबरी छोड़ दिया।

6. आइये आपको श्री नानी देव जी की तीसरी उदासी के दौरान देखे गए महत्वपूर्ण स्थानों के बारे में बताते हैं।

उत्तर- तीसरी उदासी के दौरान गुरु जी उत्तर दिशा में गए। उनके साथ हसु नाम का एक लोहार और सीहान नाम का एक बकरी चराने वाला भी था।

इस उदासी के दौरान, गुरु जी ने जलालाबाद और हुपशहर के क्षेत्रों से गुजरते हुए, आधुनिक हिमाचल प्रदेश में पबलासुर, मुंडी, सुकेत, रावलसर, ज्वालाजी, कांगड़ा, कुल्लू और स्पीति जैसे स्थानों का दौरा किया। स्पीति घाटी का दौरा करने के बाद, गुरु जी ने पतिभात, मानसरोवर झील, कैलाश रिबत, लिद्वाख, स्कर्टू, करपगल, पिहलगाम, मटन, बारामूला, अन्नू तनाग, श्रीनगर और सियालकोट का दौरा किया। वहां से वह करतारपुर स्थित अपने आवास पर गये।

7. श्रीफुर नानी देव जी द्वारा रीतारपुर में बिताए गए जीवन का विवरण दीजिए।

उत्तर: अपनी अंतिम उदासी पूरी करने के बाद, गुरु नानक देव जी अपने परिवार के साथ करतारपुर चले गए।

अपने जीवन के अंतिम अठारह वर्ष उन्होंने करतारूर में अपने परिवार के साथ एक आदर्श पत्नी की तरह बिताए। इस समय गुरु जी ने अपने उद्देश्यों को एक निश्चित आकार दिया। उन्होंने वहीं 'वर मल्हार', 'वर माझा', 'वर आसा', 'जीजी', 'ऊंकार', 'बिटि', 'पठात', 'बारा महा' आदि पदों की रचना की। करतारूर में ही उन्होंने 'सुंगत' और 'हंगत' की नींव रखी, जिससे मनुष्य की ऊँची-नीची जातियों का भेद मिट गया। अपने अंतिम दिनों को निकट देखकर उन्होंने भाई लफणा जी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।

(ग) निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 100-120 शब्दों में दीजिए:-

1. नानी देव जी के साथ घटित किन्हीं छह घटनाओं के बारे में लिखिए।

उत्तर- गुरु नानक देव जी ने किसी रहस्यमय दर्शन पर चर्चा नहीं की। बल्कि उन्होंने अपनी शिक्षाओं पर चर्चा करने के लिए आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया। उनकी शिक्षाओं का विवरण इस प्रकार है-

1. ईश्वर के बारे में विचार - गुरु जी के विचार के अनुसार, ईश्वर एक है। वह सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वोच्च, सर्वव्यापी और दयालु है।

2. 'नाम' नाम जप - गुरु जी ने नाम जप पर बहुत जोर दिया क्योंकि इससे व्यक्ति का मन शुद्ध होता है। नाम जप संसार के दुःखों का यही एकमात्र उपचार है।

3. अहंकार का त्याग - गुरु जी के अनुसार, ईश्वर की कृपा और दया पाने के लिए अहंकार का त्याग करना बहुत जरूरी है।

4. जातिवाद का खून - गुरु जी ने जातिवाद और छुआछूत का कड़ा विरोध किया। उन्होंने लुंगर और सुंगत राठियों की मदद से छुआछूत की बुराई को मिटाया।

5. नैतिकता पर जोर - गुरु जी ने अपने भक्तों को पवित्र जीवन जीने, सच बोलने, चोरी न करने और ईमानदार रहने का निर्देश दिया।

6. खोखले कर्मकाण्डों का खून - गुरु जी ने समाज में प्रचलित खोखले कर्मकाण्डों और रीति-रिवाजों की कड़ी निंदा की।

2. श्री फुर नानी देव जी की पहली उदासी के बारे में विस्तृत कहानी लिखें।

उत्तर: गुरु नानक देव जी ने अपनी पहली उदासी लगभग 1499 ई. में शुरू की थी। इस दौरान उन्होंने भारत के सुदूर और दर्शनीय क्षेत्रों का भ्रमण किया। इस उदासी के दौरान भाई मरदाना उनके साथी थे। वे गुरु के रब्बी भी थे।

1. पहली उदासी के दौरान, गुरु जी सुल्तानुर लोधी छोड़कर सैदुर (अमीनाबाद) चले गए। वहाँ गुरु जी ने लालो नामक एक बड़ई को अपना भक्त बनाया। उसने मलिक भागो की शिक्षाओं और दीक्षा-संबंधी शिक्षाओं को अस्वीकार कर दिया।

2. सैदुर से गुरु जी तुलु गए जहाँ उनकी मुलाकात सिज्जन थिंग से हुई। वह गुरु जी के वचनों और व्यक्तित्व से इतना प्रभावित हुआ कि उसने थिंग को हमेशा के लिए छोड़ दिया और गुरु जी का सेवक बन गया।

3. तुलसी से गुरु नानक देव जी कुरुक्षेत्र गए। वहाँ उन्होंने सूर्य ग्रहण देखने आए लोगों को सलाह दी कि वे सूर्य और चंद्र ग्रहण के बारे में झूठी मान्यताओं और अंधविश्वासों पर विश्वास न करें।

4. कुरुक्षेत्र से गुरु जी बानी पहुँचे, बानी से दिल्ली और दिल्ली से हरिद्वार। यहाँ उन्होंने लोगों को समझाया कि सूर्य अस्त हो जाने पर आपके पूर्वजों तक नहीं पहुँचता।

5. हरपदद्वार के बाद, गुरु जी केदारनाथ, बद्रीनाथ और जोशीमठ की यात्रा करते हुए गोरखनाथ पहुँचे। यहाँ उन्होंने गोरखनाथ के भक्तों को उपदेश दिया कि तालाबों में स्नान करने, सिर पर जल चढ़ाने, विवाहोत्सव मनाने और संसार त्यागने से मोक्ष प्राप्त नहीं होता।

6. इसके बाद गुरु जी बनारस चले गए, जहाँ उनकी मुलाकात पंडित चतुरदास से हुई जो गुरु जी के अनुयायी बन गए।

वह चला गया।

7. बनारस छोड़ने के बाद गुरु जी गया, तिन्रा, हाजीपुर, बिहार और बंगल होते हुए असम पहुँचे। धुबरी में उनकी मुलाकात सन्त शंकरदेव से हुई।

8. कामरू में गुरु जी ने नूर शाह नामक एक जादूगरनी को सिखाया कि सच्ची सुंदरता सर्वोच्च रूप में निहित है।

9. इसके बाद गुरु जी ने गुवाहाटी, पाषाण, पाषाण, ढाका, कटक का दौरा करते हुए उड़ीसा में जगन्नाथ के दर्शन किये और उसके बाद उन्होंने दर्शनीय कदम बढ़ाये।

3. नानी देव जी के बचपन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - जन्म और माता-पिता - श्री गुरु नानक देव जी का जन्म 15 अप्रैल 1469 को तलवंडी (पाकिस्तान) में हुआ था। उन्हें अजिकाल्हिकन साहब के नाम से जाना जाता है। गुरु जी की माता का नाम पत्रिता देवी और पिता का नाम महिता कालू जी था।

बचपन और शिक्षा - सात साल की उम्र में उन्हें पंडित गोवाल के पास भेजा गया। वहाँ उन्होंने देवनागरी और गुप्त लिपियों में पारंगतता हासिल की। बाद में, उन्हें संस्कृत सीखने के लिए पंडित परिज लाल के पास भेजा गया। फ़ारसी सीखने के लिए उन्हें मौलवी कुतुबुद्दीन के पास भेजा गया।

जन्म की रस्म - जब गुरु नानक देव जी की विरासत अभी भी ताजा थी, उनके माता-पिता ने प्राचीन पारंपरिक अनुष्ठानों का पालन किया -

परवर्जों के अनुसार, जनऊ धारण करना अनिवार्य था। ऋषि हरपदल ने उन्हें जनऊ धारण करने को कहा। गुरु ने उसे धारण करने से इनकार कर दिया।

उन्होंने सूत के धागों से नहीं, बल्कि पुण्य के धागों से बनी जनऊ माँगी।

लेकिन नानी देव जी को कभी भी गुरु जी के दैनिक कामों में कोई रुचि नहीं थी। उनके पिता महिता कालू जी ने उन्हें खेत में भैंस चराने का काम सौंपा, लेकिन उनका मन इस काम में नहीं लग रहा था। उनके पिता ने एक बार गुरु जी को बीस रुपये लेकर बाजार में एक अच्छा और लाभदायक सौदा करने के लिए भेजा। रास्ते में उन्होंने उन बीस रुपयों से भूखे साधुओं को भोजन कराया। इस घटना को 'सच्चा सौदा' के नाम से जाना जाता है। मेरे पति का विवाह - 14 वर्ष की आयु में, मेरे पति की सगाई बटाला के मूलचुंद की बेटी बीबी सुलखानी से हुई। अगले वर्ष, मेरे पति का विवाह हो गया। बीबी सुलखानी ने दो बेटों को जन्म दिया - सारी चुंद और लखमी दास।

4. नानी देव जी के सुल्तानपुर लोधी के समय का वर्णन करें।

उत्तर: यह देखकर कि गुरु जी को घर के कामों में रुचि नहीं थी, महात्मा कालू जी ने गुरु जी से 1486-87 में स्थान बदलने को कहा।

1100 ई. में उन्हें सुल्तानपुर लोधी भेजा गया। वहाँ वे अपनी बहन नानकी के चाचा जयराम के पास रहे। गुरु जी को फ़ारसी की शिक्षा दी गई।

और गुप्तचर का ज्ञान तो था ही, इसलिए जयराम की सिफ़ारिश पर सुल्तानपुर लोधी के फ़ौजदार दौलत खान ने गुरु जी को सरकारी मोदीखाने में भूंदरी की नौकरी दे दी। उन्होंने अपना काम बहुत ईमानदारी से किया। तभी किसी ने उनके खिलाफ़ शिकायत कर दी। जब मोदीखाने का निरीक्षण किया गया, तो हिसाब-किताब सही पाया गया। गुरु जी ने अपनी बेटी को भी वहीं बुला लिया और वहाँ सादा और संयमित जीवन जीने लगे। वह सुबह सूरज के साथ मंदिर जाती थी।

नदी में स्नान करते समय, वह भगवान का नाम जपते थे और अपनी आय का कुछ हिस्सा जरूरतमंदों को दान करते थे। जन्म साखियों के अनुसार, गुरु नानक साहिब प्रतिदिन नदी में स्नान करने जाते थे। वह पाँच दिनों तक घर नहीं लौटे। इस कारण, गुरु नानक देव जी के नदी में डूबने की खबर सुल्तानपुर लोधी तक फैल गई। पाँच दिनों तक समाधि में रहने के बाद गुरु नानक देव जी को ज्ञान की प्राप्ति हुई। ऐसा माना जाता है कि उन्हें 1499 में ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। ज्ञान प्राप्ति के बाद, गुरु जी ने 'न हिंदू, न मुसलमान' शब्द कहे। इन महत्वपूर्ण शब्दों के साथ, उन्होंने अपनी यात्रा शुरू की और अपना शेष जीवन ज्ञान की खोज में बिताया। उन्होंने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और अपनी लंबी यात्रा शुरू की।

5. फुर नानी देव जी के प्रारंभिक जीवन का वर्णन कीजिए।

उत्तर- * गुरु नानक देव जी का जन्म 15 अप्रैल 1469 ई. को हुआ था।

* उनका जन्मस्थान लाहौर से लगभग 64 किलोमीटर दक्षिण में तलवंडी (ननकाना साहिब) ज़िले में शेखूरा था। गुरु जी की माता का नाम पत्रिता देवी

* था। उनके पिता महिता कालू नामक एक किसान थे, जो जागीरदार राय बुलार के अधीन एक किसान थे। वे खितरी मूल के बेदी परिवार से संबंधित थे। गुरु जी की बहन का नाम नानकी था।

* अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तरह उसे खेलने-कूदने में बहुत कम रुचि थी।

* वे अपने साथियों के साथ परमेश्वर की महिमा बाँटते थे।

* वे अपने घरों से रोटी और भोजन लाते थे और उसे गरीब बच्चों में बाँटते थे।

* गुरु नानक देव जी को सात साल की उम्र में एक चरवाहे लड़के के बोर्डिंग स्कूल में भेजा गया था। बोर्डिंग स्कूल में उन्होंने देवनागरी और गुप्त लिपि में महारत हासिल की।

* गुरु नानक देव जी के जन्म अभिलेखों से पता चलता है कि उन्होंने एक ऋषि से ईश्वर के बारे में प्रश्न पूछा था और उन्हें ध्यान कराया था। इसके बाद, गुरु जी को आगे की सलाह के लिए ऋषि परिजार लाल के पास भेजा गया।

* सिख परम्पराओं के अनुसार बालक गुरु नानक देव जी को फ़ारसी सीखने के लिए मौलवी कुतुबुद्दीन के पास भेजा गया था।

* जब गुरु नानक देव जी की ख्याति बढ़ रही थी, तब उनके माता-पिता उनका विवाह पुराने रीति-रिवाजों के अनुसार करना चाहते थे, लेकिन गुरु जी ने मना कर दिया। उन्होंने विवाह को सूत के धागों से नहीं, बल्कि सद्गुणों के धागों से करने पर ज़ोर दिया।

* एक बार उनके पिता ने गुरु जी को बीस रुपये लेकर बाज़ार में एक उचित और लाभदायक सौदा करने के लिए भेजा। रास्ते में उन्होंने उन बीस रुपयों से भूखे साधुओं को भोजन कराया। इस घटना को 'सिखा सौदा' के नाम से जाना जाता है। 6. गुरु नानक देव जी के ईश्वर के बारे में क्या विचार थे? विवरण लिखिए।

उत्तर: गुरु नानक देव जी ने किसी रहस्यमय दर्शन का प्रचार नहीं किया, बल्कि उन्होंने अपनी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाने के लिए लोक भाषा का प्रयोग किया।

ईश्वर के बारे में विचार - गुरु नानक देव जी ने ईश्वर की एकता का उपदेश दिया। गुरु जी के अनुसार, ईश्वर सभी देवी-देवताओं से श्रेष्ठ है। जीजी साहिब के आरंभ में दिए गए मूल मंत्र - 39 सप्तनाम, कर्तागुर्खा, परिनरभु

दिव्य माँ के बारे में उनके विचारों का सार पंवार, अकाल मुरपत, अजूनी, सैभु, गुरु रिसपद की रचनाओं में मिलता है, जो इस प्रकार हैं:

1. ईश्वर एक है - गुरु नानक देव जी ईश्वर की एकता में विश्वास करते थे। उनके अनुसार, ईश्वर सभी देवी-देवताओं से श्रेष्ठ है। उनके अनुसार, ईश्वर एक है।
2. ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है - गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं के अनुसार, ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है। वह संसार के प्रत्येक जीव में विद्यमान है। गुरु जी के अनुसार, ईश्वर नकारात्मक और सकारात्मक दोनों गुणों का स्वामी है।
3. ईश्वर महान और सर्वोच्च है - गुरु नानक देव जी के अनुसार, ईश्वर महान और सर्वोच्च है। मनुष्य के लिए उसकी महानता और सर्वोच्चता का वर्णन करना संभव नहीं है। अनगिनत लोगों ने ईश्वर की महानता और सर्वोच्चता के गीत गाए हैं। ईश्वर की महानता की चर्चा हजारों ग्रंथों में की गई है, फिर भी उसकी महानता और सर्वोच्चता का पूर्ण वर्णन नहीं किया जा सकता। केवल ईश्वर ही हमारी सच्ची महानता को जानता है।
4. ईश्वर निराकार है - गुरु जी के अनुसार, ईश्वर निराकार है। ईश्वर का कोई रंग, रूप या आकार नहीं है। इसलिए, उसकी पूजा मूर्ति बनाकर नहीं की जा सकती।
5. ईश्वर अत्यंत दयालु हैं - गुरु जी के अनुसार, ईश्वर अत्यंत दयालु हैं। वे न केवल अपने भक्तों का ध्यान रखते हैं, बल्कि उन्हें जीवन की आवश्यक वस्तुएँ भी प्रदान करते हैं। गुरु नानक देव जी का मानना है कि हमें जो कुछ भी मिलता है, वह ईश्वर का उपहार है।

घोड़न: हरिपबुंदर पासुंग (राज्य संसाधन अधिकारी, सामाजिक विज्ञान) एससीईआरटी, पंजाब
रणजीत कौर (लै. इप्यास) एस.एस.एस. स्कूल छीना बेट, गुरदासपुर और
मन्दी कौर (एस.एस.पी.एम.) एस.के.एस.एस. स्कूल दुखन, लुधियाना।